अमृतमहोत्सवग्रन्थमाला-07

स्वतन्त्रतायाः अमृतमहोत्सवः

# शास्त्रशिक्षणम्

[Teaching of Shastra]

(सरलमानकसंस्कृतेन लिखितम्)

प्रधानसम्पादकः
**प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी**
कुलपतिः

लेखकः
**डॉ. मनीषजुगरानः**
सहायकाचार्यः
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वेदव्यासपरिसरः,
बलाहरः, हिमाचलप्रदेशः

योऽनूचानः स नो महान्।
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

**केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः**
**संसदः अधिनियमेन स्थापितः**
**नवदेहली-110058**

अमृतमहोत्सवग्रन्थमाला–07

स्वतन्त्रतायाः
अमृतमहोत्सवः

# शास्त्रशिक्षणम्

## [Teaching of Shastra]

**( सरलमानकसंस्कृतेन लिखितम् )**


प्रधानसम्पादकः
**श्रीनिवासः वरखेडी**
कुलपतिः

लेखकः
**डॉ. मनीषजुगरानः**
साहित्याचार्यः, शिक्षाचार्यः (लब्धस्वर्णपदकः)
नेट–जे.आर.एफ. विद्यावारिधिः
सहायकाचार्यः, शिक्षाशास्त्रविद्याशाखा
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वेदव्यासपरिसरः
बलाहरः, हिमाचलप्रदेशः



**केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः**
**संसदः अधिनियमेन स्थापितः**
**नवदेहली**

प्रकाशकः
कुलसचिवः
**केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः**
संसदः अधिनियमेन स्थापितः
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नवदेहली-110058
ईपीएबीएक्स : 28524993, 28521994, 28524995
ई मेल : res-pub@csu.co.in
वेबसाईट : www.sanskrit.nic.in

© केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

प्रथमं संस्करणम् : 2022

ISBN : 978-93-85791-57-4

मूल्यम् : ₹ 200.00

मुद्रकः
**डी.वी. प्रिंटर्स**
97-यू.बी., जवाहर नगर, दिल्ली-110007

# प्ररोचना

सुदीर्घकालात् आरभ्य अस्माकं देशे विविधशास्त्राणाम् अध्ययनम् अध्यापनं च प्रवर्तमानम् अस्ति एव। किन्तु तत् शास्त्रशिक्षणं कथं प्रवर्तमानम् अस्ति, तस्य प्रयोजनानि कानि, तत्र अनुभूयमाना: समस्या: का: - इत्यादिविषये अधिकं चिन्तनं प्रवृत्तं न दृश्यते। एतादृशान् अंशान् एव मनसि निधाय लिखित: नूतन: ग्रन्थ: अस्ति एष: 'शास्त्रशिक्षणम्' इत्याख्य:।

विदुषा डा. मनीष जुगरानेन सम्यक् अधीत्य, विविधेभ्य: मूलेभ्य: विषयान् संगृह्य सज्जीकृते अस्मिन् ग्रन्थे बहव: उत्तमा: अंशा: सन्ति। पञ्चसु अध्यायेषु विभक्तेषु तेषु अंशेषु प्राय: सर्वेऽपि उपादेया: सन्ति। यद्यपि तत्र तत्र किञ्चिदिव पुनरुक्ति: दृश्यते तथापि तत्तत्प्रसंगे सापि दोषत्वेन न अनुभूयते।। ग्रन्थस्य प्रथमाध्याये द्वितीयाध्याये च अविशेषेण सर्वशास्त्राणां शास्त्राध्ययनस्य च विषये अत्यन्तम् उपयोगिन: अंशा: संगृहीता: सन्ति। ततश्च तृतीये अध्याये व्याकरणशास्त्रशिक्षणस्य चतुर्थे अध्याये साहित्यशिक्षणस्य च विषये विशेषतया चिन्तनं प्रवर्तितम् अस्ति। पञ्चमे अध्याये पुन: न केवलं शास्त्रशिक्षणप्रविधय: चर्चिता: सन्ति, अपि तु शास्त्रसंरक्षणक्रमा: अपि विशदतया निरूपिता: सन्ति। प्रत्यध्यायम् अभ्यासा: अपि लेखकेन एव प्रदत्ता: सन्ति। ग्रन्थे सर्वत्र प्रयुक्ता भाषा सरलमानकसंस्कृतम् अनुसरति इत्यत: सामान्य: पाठक: अपि ग्रन्थस्य अस्य अध्ययनेन लाभान्वित: भवितुम् अर्हति।

**- डॉ. एच्.आर्.विश्वास:**

# विषयानुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| **1.** | **प्रथमोऽध्याय:** | **1–43** |
| | शास्त्रसम्प्रत्यय: | 3 |
| | शास्त्रनिर्वचनम् | 3 |
| | वेदा: | 5 |
| | वेदाङ्गानि | 10 |
| | उपनिषद: | 21 |
| | दर्शनानि | 26 |
| | पुराणानि | 25 |
| | शास्त्रेषु मङ्गलाचरणपरम्परा | 32 |
| | अनुबन्धचतुष्टयम् | 34 |
| | शास्त्राध्ययनप्रयोजनानि | 38 |
| **2.** | **द्वितीयोऽध्याय:** | **45–81** |
| | शास्त्रशिक्षणसरणि: | 47 |
| | अन्वयव्यतिरेकौ | 50 |
| | अधिकरणम् | 51 |
| **3.** | **तृतीयोऽध्याय:** | **83–139** |
| | व्याकरणशिक्षणम् | 85 |
| | व्याकरणशास्त्रम् | 85 |
| | व्याकरणशास्त्रीयपरम्परा | 86 |
| | व्याकरणशास्त्रस्य प्रयोजनानि | 88 |
| | व्याकरणशिक्षणम् | 94 |
| | व्याकरणशिक्षणस्य विधय: | 96 |
| | व्याकरणशिक्षणस्य पारम्परिकविधय: | 97 |
| | व्याकरणशिक्षणस्य आधुनिकविधय: | 105 |
| | परिस्थितिनिर्माणम् | 111 |
| | समूहचर्चाविधि: | 112 |

| | | |
|---|---|---|
| **4.** | **चतुर्थोऽध्यायः** | **141–177** |
| | साहित्यशिक्षणम् | 143 |
| | साहित्यम् | 143 |
| | साहित्यशास्त्रम् | 144 |
| | अलङ्कारः | 145 |
| | अलङ्काराणाम् ऐतिह्यं क्रमिकविकासश्च | 146 |
| | छन्दः | 149 |
| | छन्दःशास्त्रीयपरम्परा | 151 |
| | छन्दसां भेदाः | 153 |
| | छन्दोनिर्धारकतत्त्वानि | 155 |
| | छन्दोऽलङ्कारशिक्षणस्य विधयः | 158 |
| **5.** | **पञ्चमोऽध्यायः** | **179–204** |
| | शास्त्रपरीक्षणविधयः शास्त्रसंरक्षणप्रक्रमाश्च | 181 |
| | शास्त्रपरीक्षणविधयः | 181 |
| | कण्ठस्थीकरणम् | 181 |
| | वेदपाठविधयः | 182 |
| | शलाकापरीक्षा | 191 |
| | शास्त्रार्थः | 191 |
| | समस्यापूर्त्तिः | 195 |
| | प्रहेलिका | 195 |
| | शास्त्रसंरक्षणप्रक्रमाः | 198 |
| | शास्त्राध्ययनपरम्परायाः विकासः | 199 |
| | सर्वेषामपि शास्त्राणां पाठ्यक्रमे समावेशः | 199 |
| | शास्त्रसम्बद्धपाण्डुलिपीनां सम्पादनं प्रकाशनञ्च | 200 |
| | शास्त्राणाम् अङ्कीकरणम् (Digitalization) | 200 |
| | शास्त्रप्रशिक्षणम् | 201 |
| | शास्त्रानुसन्धानकेन्द्राणि | 201 |
| | शास्त्राध्ययनकेन्द्राणि | 202 |